भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान,

खण्डवा रोड, इंदौर-452001

फाइल क्रमाकं : प्रेस एवं पब्लिसिटी/प्रेस नोट/2022/32

सतना की भूमि में सोयाबीन विस्तार की असीम संभावनाएं, सोया किसानों को पहुंचेगा आर्थिक लाभ

इंदौर, मध्यप्रदेश – निरंतर बदलते मौसम एवं जलवायु हमेशा से किसानों के लिए एक बड़ी चुनौती रहा हैं, जिससे सभी फसलों के उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसी समस्या के चलते मध्यप्रदेश के सतना जिले में सोयाबीन के उत्पादन में भारी मात्रा में गिरावट देखने को मिली है। जमीनी समस्याओं को समझने के लिए कार्यवाहक निदेशक डॉ. नीता खांडेकर, डॉ. एस.डी. बिलोर, प्रधान वैज्ञानिक (एग्रोनॉमी) और डॉ. लक्ष्मण सिंह राजपूत, वैज्ञानिक (प्लांट पैथोलॉजी) ने क्षेत्र का दौरा किया। समूह ने कृषि विज्ञान केंद्र, सतना के विषय वस्तु विशेषज्ञों (एसएमएस) के साथ समस्याओं पर चर्चा की और सोयाबीन की खेती कम होने का मुख्य कारण जैसे उन्नत उत्पादन तकनीक, नयी किस्मों के गुणवत्ता वाले बीज की जानकारी का अभाव, साथ ही अधिक वर्षा के बारे में बताया। चावल की खेती के लिए उपयोगी मृदा की गहराई एवं जल निकास की व्यवस्था सोयाबीन की फसल के लिए अनुकूल नहीं हैं। गठित समूह के प्रधान वैज्ञानिक डॉ एस. डी. बिल्लोरे ने बताया की लगातार धान की खेती से भूमि की निचली परत कठोर हो जाती है, जिसके कारण मेड में जल ठहर जाता है अर्थात उपरोक्त दोनों ही स्तिथियाँ सोयाबीन के लिए प्रतिकूल है जिससे उत्पादन में भी कमी देखने को मिलती है। इस समस्या के सुझाव में डॉ खांडेकर, निदेशक (ए) ने बताया कि फसल के अनुकूल क्षेत्र के निर्माण हेतु यह महत्वपूर्ण है कि किसान उचित जल निकासी, भूमि की गहरी जुताई और जैविक खाद का उपयोग सुनिश्चित करें। उन्होंने आगे कहा कि गहरी जुताई से खेत की गहराई बढ़ने का लाभ भी मिलेगा और इसलिए मशीनीकरण और फरो बनाना संभव होगा जिससे अतिरिक्त पानी की निकासी में मदद मिलेगी। समूह ने किसानों की समस्याओं को समझने और सोयाबीन की खेती की सफलता सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण पहलुओं पर उन्हें उन्मुख करने के लिए किसानों के साथ चर्चा भी की गयी।

.....